Gyanvividha, Vol.-3; Issue-2 (Apr.-June) 2026 : PP-115-119

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-4.5
Vol.-3; Issue-2 (Apr.-June) 2026
Page No.- 115-119
©2026 Gyanvividha
https://journal.gyanvividha.com

Author's :
ज्योति कुमारी
शोध छात्रा, इतिहास विभाग,
बी0आर0ए0 बिहार विश्वविद्यालय,
मुजफ्फरपुर (बिहार)–842001.

Corresponding Author :
ज्योति कुमारी
शोध छात्रा, इतिहास विभाग,
बी0आर0ए0 बिहार विश्वविद्यालय,
मुजफ्फरपुर (बिहार)–842001.

गोस्वामी तुलसीदास – जीवन, व्यक्तित्व और कृतित्व

गोस्वामी तुलसीदास भारतीय भक्ति परम्परा के ऐसे कालजयी कवि हैं, जिन्होंने अपनी वाणी से न केवल साहित्यिक धरोहर को समृद्ध किया, बल्कि समाज, संस्कृति और अध्यात्म के क्षेत्र में भी अविस्मरणीय योगदान दिया है। मध्यकालीन भारत में इस्लामिक शासन व्यवस्था के दौरान नवीन सभ्यता एवं संस्कृति का विकास हुआ जिसने भारतीय संस्कृति के साथ–साथ राजनीतिक अर्थव्यवस्था को भी प्रभावित किया। जनता उनके धार्मिक कट्टरता से भयभीत थी। वही वर्णव्यवस्था एवं जाति व्यवस्था की कट्टरता के कारण हिन्दू धर्म विखंडित हो रहा था।[1] उसी समय तुलसीदास हिन्दू धर्म के अन्तर्गत भक्ति आंदोलन के माध्यम से राम भक्ति को अपना आराध्य बनाकर भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति को पुर्नजीवित करने तथा समाज की चेता को आलोकित करने का प्रयास किये।[2] प्रसिद्ध इतिहासकार स्मिथ ने अपने सुविख्यात ग्रन्थ 'अकबर द ग्रेट मुगल' में लिखा है कि ''तुलसीदास अपने युग में भारतवर्ष के सबसे महान व्यक्ति थे।''[4]

तुलसी साहब जी अपने को तुलसीदास का अवतार मानते हैं घट रामायण में पूर्व जन्म की स्मृति को इस प्रकार चित्रित किये हैं :

राजापुर जमुना की तीर। जहाँ तुलसी का भया सरीरा।।
विधि बुन्देलखण्ड वोहि देसा। चित्रकोट बीस दस कोसा।।
संवत पंद्रसै नावासी। भादौं सुदी मंगल एकादसी।।[6]

(अर्थात् तुलसी साहब भी तुलसीदास की जन्मतिथि 1589 मानते हैं।) माता प्रसाद गुप्त[7], बाबू शिवनंदन सहाय[8], मिर्जापुर में चली शिष्य परम्परा[9], हरिकृष्ण अवस्थी[8] आदि विद्वानों ने तुलसीदास की जन्मतिथि सं0 1589 का समर्थन किये हैं। अन्ततः विभिन्न अन्वेषणात्मक खोजा एवं विद्वानों द्वारा लिखे गये लेखों के आधार पर संवत 1589 (1532 ई0) वाली तिथि ही तर्क संगत लगती है।

जन्मस्थान : मूलगोसाई चरित में बाबा वेणीमाधव ने तुलसीदास का जन्म स्थान राजापुर को बताया है जो यमुना नदी के किनारे स्थित है।[11] माता प्रसाद गुप्त, श्यामसुंदरदास, शिवसिंह सेंगर, तुलसीसाहिब, डॉ0 जॉर्ज ए0 ग्रियर्सन, राजपति दीक्षित आदि विद्वान राजापुर को तुलसीदास का जन्म स्थान मानते हैं। इम्पीरियल गजेटियर ऑफ इण्डिया के अनुसार ''राजापुर एक कस्बा है जो बाँदा जिले में स्थित है।''[11]

गोस्वामी तुलसीदास वैयक्तिक स्तर पर एक विरक्त का जीवन जीते थे किन्तु चेतना के स्तर पर लोक जीवन के प्रति उनमें गहरी सूझ–बूझ थी। उनके काव्यों में तत्कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक स्थितियों का स्पष्ट चित्र ही नहीं मिलता अपितु क्षुब्ध हृदय की तीव्र प्रतिक्रिया और उसे बदल देने के उपाय के संधान की विकलता भी दिखाई पड़ती है।

प्रस्तुत आलेख में हम प्राप्त शोध–सामग्री एवं साक्ष्यों के आधार पर तुलसीदास के जीवन वृत्त एवं कृतित्व को विश्लेषित करने का प्रयास कर रहे हैं। वैसे गोस्वामी तुलसीदास के जन्म एवं उनकी कृतियों के सम्बन्ध में

मतैक्य नहीं है। इसका कारण यह है कि उन्होंने अपने जीवन परिचय को गुप्त रखा है।

जन्म तिथि : सर्वप्रथम वेणीमाधव अपनी कृति मूल गोसाईचरित में तुलसीदास की जन्मतिथि के बारे में इस प्रकार लिखे हैं :–

पंद्रह सौ चौवन विषै कालिंदी के तीर।
सावन सुक्ला सत्तिमी तुलसी धरेउ सरीर।।[4]

अर्थात् वेणीमाधव के अनुसार तुलसीदास का जन्मसंवत 1554 के सावन महीने के शुक्ल पक्ष की सप्तमी तिथि को हुआ था।

जार्ज ग्रियर्सन अन्वेषणात्मक अध्ययन के आधार पर तुलसीदास की जन्मतिथि संवत 1589 (1532 ई0) स्वीकार करते हैं।[5]

नाम : तुलसीदास को बचपन में 'रामबोला' के नाम से पुकारा गया है। तुलसीकृत रचनाओं में भी इस नाम का उल्लेख है :–

राम को गुलाम नाम राम बोला राख्यो राम।
काम यहै नाम हौं कबहूँ कहत हौं।।[12]

(अर्थात तुलसीदास जी लिखते हैं कि मैं भगवान राम का गुलाम हूँ इसलिए लोग मुझे रामबोला कहने लगे।)

तुलसीदास अपनी रचनाओं में स्वयं का नाम तुलसी का भी जिक्र किये है–

केहि गनती महँ गनती जस बन घास।
राम जपत भए तुलसी तुलसीदास।।[13]

माता–पिता : श्याम सुंदर दास तथा ग्रियर्सन ने लोकवार्ता को आधार मानते हुए पिता का नाम आत्माराम तथा माता का नाम हुलसी का उल्लेख अपने साहित्य में किये है।

तुलसीदास स्वयं अपनी रचना रामचरितमानस में माता का नाम हुलसी होने का जिक्र करते हैं।

रामहि प्रिय पावन तुलसी सी।
तुलसीदास हित हिय हुलसी सी।।[14]

गुरु : तुलसीदास की कृतियों से उनके गुरु के सम्बन्ध में कुछ जानकारी मिलती है। तुलसीदास ने रामचरितमानस में गुरु की वंदना कर गुरु का संकेत किये हैं लेकिन उनके गुरु का नाम पूरी तरह स्पष्ट नहीं होता है।

बंदऊँ गरु पद कंज, कृपा सिंधु नर रूप हरि।
महामोह तम पुंज जासु वचन रविकर निकर।।[15]

श्यामसुंदरदास तथा वेणीमाधव दास ने भी नरहरिदास को ही गुरु बताये है।

गृहस्थ जीवन : तुलसीदास का विवाह दीनबंधु पाठक की कन्या रत्नावली से हुआ जिनसे तारक नामक एक पुत्र की प्राप्ति हुई जिसकी अल्पायु में ही मृत्यु हो गयी।[16]

एक दिन उनकी पत्नी बिन बताए मायके चली गयी। पत्नी से दूरी बर्दाश्त नहीं होने के कारण तुलसीदास ससुराल चले गये तब उनकी पत्नी ने लज्जित करते हुए कहा –

लाज न लागत आपकौ दौरे आयेहु साथ।
धिक–धिक ऐसे प्रेम को कहाँ कहूँ मैं नाथ।।[17]

पत्नी के उपदेश ने उनको संत बना दिया। उनका हृदय परिवर्तन हुआ तथा अयोध्या चले गये एवं अंतिम समय काशी को ही आश्रय बनाकर रामभक्त के रूप में प्रसिद्धि अर्जित किये।[18]

वृद्धावस्था एवं मृत्यु : वृद्धावस्था में गोस्वामी जी को दैहिक पीड़ा में भी गुजरना पड़ा था। बाहुपीड़ा के साथ–साथ तुलसीदास को बरतोर भी हुआ जिसका उल्लेख उन्होंने हनुमान बाहुक में भी किया है –

पॉय पीर पेट पीर बाँह पीर मुँह पीर,
जरजर सकल सरीर पीर मई है।
देवभूत पितर करम खल काल ग्रह,
मोहि पर दवरि दमानक सी दई है।।[19]

(अर्थात् तुलसीदास ने अपने शरीर की अत्यंत पीड़ा और लाचारी का वर्ण करते हुए हनुमान जी से रक्षा की गुहार लगाई। वे कहते हैं कि मेरे पैरों, पेट, भुजाओं में भयंकर पीड़ा है और मुख में भी कष्ट है। एक तरह से शरीर पीड़ा का घर बन गया है। मानों देवता, भूत, पितर, पूर्व जन्म के कर्म, दुष्ट व्यक्ति, क्रूर ग्रह सभी ने एक साथ मिलकर मुझ पर हमला कर दिया है।)

अंत में इसी पीड़ा से उनकी मृत्यु हो गयी।

मृत्यु तिथि : घट रामायण से उनकी मृत्यु की तिथि का पता इस प्रकार चलता है–

संवत सोरह सौ असी नदी वरून के तीर।
सावन सुकला सप्तमी, तुलसी तज्यो सरीर।।[20]

(अर्थात् तुलसीदास की मृत्यु सं0 1680 में वरूणा नदी के तट पर श्रावणमास के शुक्ल पक्ष की सप्तमी तिथि के दिन हुआ।)

कृतियाँ : तुलसी रचित 12 रचनाएँ प्रमाणित मानी जाती है[21], ये रचनाएँ निम्नलिखित है–

1. गीतावली
2. श्री कृष्णगीतावली
3. रामचरितमानस
4. कवितावली

5. विनयपत्रिका
6. दोहावली
7. रामललानहछू
8. जानकी मंगल
9. पार्वती मंगल
10. बरवै रामायण
11. वैराग्य संदीपनी
12. रामाज्ञा

तुलसीरचित उपर्युक्त 12 रचनाओं का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है –

रामललानहछू : 20 छंदों में लिखित यह सोहर लोकगीत एक खण्ड काव्य के अन्तर्गत आता है। नहछू संस्कार एक विशिष्ट रीति है जिसमें पैर के नाखून काटे जाते है। वेणीमाधव दास लिखते हैं कि –

मिथिला में रचना किये, नहछू मंगल दोय।
मुनि प्रांचे मंत्रित किये, सुख पावे सब कोय।।[22]

(अर्थात् नहछू संस्कार मिथिला में भगवान राम का पहली बार हुआ था।)

वैराग्य संदीपनी : यह तुलसीदास द्वारा रचित एक छोटी सी रचना है जो उनके प्रमुख ग्रन्थों में से एक है। इसमें कुल 62 छंद है जिसमें दोहा, सोरठा, चौपाई छंदों का प्रयोग हुआ है।[23] इस ग्रन्थ को 3 भागों में विभक्त कर संत स्वभाव वर्णन, संत महिमा वर्णन और शांति वर्णन का प्रतिपादन किया गया है। गृहस्थ जीवन की अशांति की अशांति के बाद जो वैराग्य भाव उनके मानस पटल छाया हुआ था उसी की सहज अभिव्यक्ति हुई है।

जानकी मंगल : यह गोस्वामी जी द्वारा रचित बहुत ही माधुर्य काव्य है। इसमें भगवती जानकी जी तथा भगवान राम के मंगलमय विवाहोत्सव का बड़े ही मधुर शब्दों में वर्णन किया है। 216 छंदों के इस काव्य खण्ड सीता जी के स्वयंवर से लेकर वरमाला, लग्नपत्रिका, बारात, विवाह संस्कार तथा अंत में अयोध्या गमन आदि तक के प्रसंगों का संक्षेप में वर्णन है।[24]

पार्वती मंगल : जानकी मंगल की तरह पार्वती मंगल भी अवधि में लिखा हुआ छोटा सा खण्ड काव्य है। पार्वती मंगल में कुल 164 छंद है जिसमें 148 सोहर और 16 हरिगीतिका है।[25] पार्वती मंगल में पार्वती जी की कठोर तप, साधना तथा शिव–पार्वती विवाह एवं विदाई का हृदयग्राही एवं मनोरम चित्रण है।[26]

रामाज्ञा प्रश्न : रामाज्ञ प्रश्न काव्यात्मक दृष्टि से कोई ऊँचा ग्रन्थ नहीं है। यह ब्रजभाषा में लिखी गयी है। इसमें कुल 7 सर्ग और प्रत्येक सर्ग में 7 सप्तक तथा प्रत्येक सप्तक में 7 दोहे हैं।[26]

वरवै रामायण : बरवै रामायण तुलसीदास की अमर लेखनी की एक सुंदर काव्यात्मक रचना है जिसमें गोस्वामी जी द्वारा सीता माता एवं श्री रामचन्द्र जी के सौंदर्य का वर्णन किया गया है। बरवैरामायण 7 काण्डों में विभाजित है जिसमें पद्यों की संख्या 69 है।[27] ये समस्त छंद बहुत अस्पष्ट है जिनमें न तो कथा का कोई संगठित रूप मिलता है और न भक्ति विषयक उक्तियों का।

गीतावली : 7 कांडों में विभक्त यह रचना गीतबद्ध मुक्तक काव्य है। ब्रजभाषा में लिखित है।[28] तुलसीदास के इस रचना में जितना मधुर एवं मर्मस्पर्शी पक्ष हमें मिलता है, उतना उनकी अन्य किसी रचना में नहीं मिलता है। इसमें बालकांड के आरंभ में भगवान राम के आर्विभाव से लेकर उत्तरकांड में उनके राजवेष, सीता–वनवास, लवकुश जन्म इत्यादि विभिन्न प्रसंगों का वर्णन है। इसमें कुल मिलाकर 330 पद्य है।

श्रीकृष्ण गीतावली : श्री कृष्णगीतावली एक प्रसिद्ध भक्ति काव्य है जो श्री कृष्ण लीला पर आधारित है, जिसमें कुल 61 पद है।[29] इसमें श्रीकृष्ण का बाल वर्णन रूप–सौंदर्य, विरह–वर्णन, उद्धव–गोपी संवाद, गोवर्धन धारण भ्रमर गीत तथा द्रोपदी–लज्जा रक्षण आदि चित्रित है। डॉ0 विमल कुमार जैन लिखते हैं– ''सूर के पदों से ही प्रभावित होकर उन्होंने कृष्णगीतावली की रचना किये जिसका एक मात्र उद्देश्य अपने उपास्य श्रीराम के ही अवतारभूत श्रीकृष्ण की लीला का वर्णन कर रामभक्त और कृष्णभक्त संतों में पारस्परिक सद्भावना और सामंजस्य बनाए रखना था।'' यह एक भक्तिपूर्ण काव्य है जो श्रीराम और श्रीकृष्ण दोनों के प्रति तुलसीदास के गहरे प्रेम को दर्शाती है।

दोहावली : यह ब्रजभाषा में रचित 573 छंदों का मुक्तक काव्य है जिसमें तुलसीदास ने अपनी अनुभूतियों को बड़े ही भावपूर्ण दोहों में व्यक्त किया है। भक्ति, ज्ञान, सदाचार, प्रेम, राजस्व व्यवस्था, अर्थव्यवस्था, नीति आदि विविध विषयों पर इतने दोहे इस ग्रन्थ में दिखाई पड़ता है।[30]

इसमें प्रायः मानस के 85 छोटे, सतसई के 131 दोहों, रामाज्ञा के 35 दोहे तथा वैराग्य सन्दीपिनी के 2 दोहे हैं।[31] दोहावली में तुलसीदास तत्कालीन युग की घटित घटनाओं पर प्रकाश डाला है।

रामचरितमानस : भारतीय साहित्य के इतिहास में ही नहीं विश्व साहित्य में रामचरितमानस का विशिष्ट स्थान प्राप्त है। रामचरितमानस मध्यकाल का सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ है। तुलसीदास अपनी कृति रामचरितमानस में लिखते हैं–

''संवत सोरह सै एकतीसा। करउँ कथा हरि पद धरि सीसा।
नौमी भौम बार मधुमासा। अवध पुरी यह चरित प्रकासा।''[33]

(अर्थात् रामचरितमानस की रचना तुलसीदास ने संवत 1631 वि0 चैत शुक्ल की नवमी तिथि को मंगलवार को प्रारंभ की थी।)

इस ग्रन्थ में 7 कांड है जिसका वर्णन निम्न है[32] –

1. बालकांड, 2. अयोध्याकांड, 3. अरण्यकांड, 4. किष्किन्धाकांड, 5. सुंदर कांड, 6. लंकाकांड, 7. उत्तरकांड

बालकांड : बालकांड में मंगलाचरण, गुरुवंदना, देवी–देवताओं की वंदना, रामजन्म से लेकर धनुषभंग, सीता–राम विवाह का प्रसंग विस्तार से वर्णित है।

अयोध्याकांड : इस कांड में रामचंद्र को युवराज पद देने का विचार, कैकेयी का कोप भवन में जाना, श्री राम–जानकी–लक्ष्मण का वनगमन, निषाद मिलाप, केवट का प्रेम, चित्रकूट में निवास, भरत–शत्रुघ्न का वनगमन, श्री राम–भरत संवाद आदि का सविस्तार वर्णन है।

अरण्यकांड : इस कांड में मंगलाचरण, श्री सीता–अनसूया मिलन, रामअवध की प्रतिज्ञा, शूर्पनखा की कथा, श्री सीता हरन, नवधा भक्ति उपदेश इत्यादि का वर्णन है।

किष्किन्धाकांड : इस कांड में श्री राम से हनुमान जी का मिलाप, श्री राम–सुग्रीव की मित्रता, बालि–सुग्रीव युद्ध, सीता जी की खोज के लिए बंदरों का समुद्र लांघने का झुकाव इत्यादि का वर्णन है।

सुंदर कांड : सुंदरकांड में हनुमान जी का लंका को प्रस्थान, हनुमान विभिषण संवाद, सीता–त्रिजटा संवाद, अशोकवाटिका विध्वंस, लंका दहन, समुद्र पर श्रीराम जी का क्रोध एवं समुद्र की विनती इत्यादि का वर्णन है।

लंकाकांड : लंका कांड में नल–नील द्वारा पुल बाँधना, लक्ष्मण–मेघनाद युद्ध, भरत–हनुमान संवाद, लक्ष्मण–रावण युद्ध, रावण–हनुमान युद्ध, राम–रावण युद्ध, रावण वध, विभिषण का राज्याभिषेक, श्री सीता–राम जी का अवध के लिए प्रस्थान इत्यादि का वर्णन है।

उत्तरकांड : उत्तरकांड में श्रीराम जी का स्वागत, राम–राज्याभिषेक, वेद–स्तुति, शिव–स्तुति, श्री राम–वशिष्ठ संवाद, काकभुशुण्डि का वर्णन इत्यादि की चर्चा की गयी है।

रामचरितमानस की रचना तुलसीदास ने अवधि भाषा में की है जो कि एक लोक भाषा है। रामचरितमानस के संदर्भ में राजपतिदीक्षित लिखते हैं– ''यह महाकाव्य विश्व की एक अद्वितीय कृति है जो भारत को राष्ट्रीय गौरव प्रदान करती है।'' तुलसीदास केवल ज्ञान का ग्रन्थ नहीं लिख रहे थे। मनुष्य के नित्य जीवन में घटने वाले ईर्ष्या, द्वेष, सुख–दुःख और लोभ–मोह के विकारों के भीतर से उन्होंने परम लक्ष्य की प्राप्ति की ओर अपने पाठक को ले जाना चाहा। रामचरितमानस जीवन के हर पहलू अर्थात् आध्यात्मिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक कर्तव्यों का वर्णन करता जो व्यक्ति को एक आदर्शन जीवन जीने की ओर प्रेरित करता है। यही कारण है कि रामचरितमानस एक दिव्य कोटि का ग्रन्थ बना।

कवितावली : कवितावली ब्रजभाषा में लिखी हुई एक मुक्तक काव्य रचना है। यह ग्रन्थ 7 कांडों में विभाजित है, जिसमें भगवान राम की बाल लीला, वन गमन, लंका दहन, राक्षस–वानर संग्राम, कलिवर्णन, सीतावट वर्णन, चित्रकूट वर्णन, प्रयाग वर्णन, श्री गंगा महात्म्य वर्णन, शंकर स्तवन, काशी में महामारी इत्यादि का वर्णन है।''[33]

विनयपत्रिका : तुलसीदास की अंतिम सर्वोत्कृष्ट विशिष्ट रचनाओं में से एक विनयपत्रिका है। विनयपत्रिका भी एक संग्रह ग्रन्थ है। उनकी 12 कृतियों में मानस और विनय पत्रिका ने काव्यरचना के क्षेत्र में जो आदर्श उपस्थित किए, वे आज भी भावी कवियों के लिए काव्य रचना के आदर्श मापदण्ड है। उदयभानु सिंह काफी अवेष्णात्मक खोजों के आधार पर इस निष्कर्ष पर पहुँचते है कि विनयपत्रिका की रचना का आरंभ सं0 1631 के पश्चात् और उसका अंतिम सोपान सं0 1679 के पूर्व संपन्न हुआ होगा।[34] समीक्षकों ने इस बात का संकेत किया है कि विनयपत्रिका गोस्वामी तुलसीदास की अर्जी है, जो इस विश्व सम्राट अवधपुराधीश राम के दरबार में एक दुःखी व्यक्ति का अपने उद्धार के लिए निवेदन है कि जो संसार की असुरता, मन की चंचलता और कलियुग के अत्याचार से पीड़ित है।

विनय पत्रिका में उनकी निश्छल भक्ति भावना जिस भावुकता के साथ–साथ संसार की असुरता, मन की चंचलता, अपनी क्षुद्रता और उपास्य की महता के रूप में अभिव्यक्त हुई है, वह न केवल काव्य की दृष्टि से बल्कि भक्ति की भावना के महान ग्रन्थ के रूप में भक्तों के गले का कण्ठाहार बनी हुई है। विनय पत्रिका की रचना तुलसीदास काशी के प्रसिद्ध गोपालमंदिर स्थित तुलसीकक्ष में बैठकर किये।[35] वस्तुतः यह पत्रिका तुलसीदास की न होकर मानव मात्र की हो जाती है, तुलसीदास की भाँति जो भी भक्त अनन्य भाव से भगवान के दरबार में अर्जी लगायेगा।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि तुलसीदास का जीवन और उनकी साहित्यिक यात्रा, भारतीय संस्कृति, भक्ति और साहित्य की अमूल्य धरोहर है। गोस्वामी जी की रचना जनसमाज के लिए इतनी अनुकूल साबित हुई कि उनके वचनों को जनता कहावतों की तरह इस्तेमाल करती है। अन्य साम्प्रदायिक साधुओं की तरह उन्होंने अपना कोई निज का सम्प्रदाय नहीं चलाया तथापि उनके उपेदश इतने सार्वजनिक है कि उनको भारत की तमाम हिन्दू जनता अपने चरित्र निर्माण और धार्मिक कार्यों में एक बहुत ही स्फूर्तिदायक और प्रामाणिक पथ–प्रदर्शक मानती है। गोस्वामी जी की कृतियों से उनके व्यक्तित्व का जो स्वरूप सामने उभरता है उसके आधार पर कहा जा सकता है कि गोस्वामी जी अत्यंत निस्पृह और निर्भिक स्वभाव के एकनिष्ठ राम भक्त थे। वृद्धावस्था में तुलसीदास जी को अनेक प्रकार के असह्य शारीरिक कष्टों को भोगना पड़ता था किन्तु उनकी भक्ति निष्ठा में किसी भी प्रकार का कोई अन्तर नहीं आया बल्कि वह उत्तरोत्तर दृढ़ होती गयी। कहा जाता है कि बादशाह अकबर ने उन्हें मनसबदार बनाने का प्रस्ताव भेजा था जिसको उन्होंने यह कहकर अस्वीकार कर दिया कि –

हौं चाकर रघुबीर को पटौ लिख्यो दरबार।
तुलसी अब का होहिंगे नर के मनसबदार।।

उनकी रचनाएँ केवल ज्ञान के लिए नहीं, बल्कि लोक–कल्याण के लिए थी। संक्षेप में कह सकते हैं कि तुलसीदास जी ने अपनी समष्टि दृष्टि से न केवल समाज का मार्गदर्शन किया, बल्कि प्रेम, शील और करूणा के माध्यम से एक आदर्श

समाज की रूपरेखा भी प्रस्तुत की।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. झारखंड चौबे एवम् कन्हैयालाल श्रीवास्तव, मध्युगीन भारतीय समाज एवं संस्कृति (लखनऊ 2023), पृ0 374।
2. वही, पृ0 375।
3. बिसेंट आर्थर स्मिथ, अकबर द ग्रेट मुगल (1542–1605), ऑक्सफोर्ड क्लेरेंडन प्रेस, (लंदन 1917), पृ0 420।
4. वेणीमाधवदास, मूलगोसाई चरित, गीता प्रेस (गोरखपुर 1940), पृ0 21
5. जार्ज, ए0 ग्रियर्सन, इंडियन ऐंटीक्वेरी, भाग 22 (बॉम्बे 1893), पृ0 264।
6. तुलसी साहिब, घट रामायण (इलाहाबाद 1916), पृ0 415।
7. माताप्रसादगुप्त, तुलसीदास, हिन्दी परिषद् प्रकाशन, (इलाहाबाद, 2015), पृ0 144।
8. बाबू शिवनंदन सहाय, गोस्वामी तुलसीदास, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् (पटना, 1961), पृ0 2।
9. हिन्दी विश्वकोष, खंड–5, नागरी प्रचारिणी सभा (वाराणसी 1965), पृ0 40।
10. हरिकृष्ण अवस्थी, तुलसीदास : परिवेश, प्रेरणा, प्रतिफलन, नागरिप्रचारिणी सभा (वाराणसी संवत 2023), पृ0 5।
11. डब्लू0डब्लू0 हण्टर, इम्पीरियल गजेटियर ऑफ इण्डिया, भाग–2 (लंदन 1881), पृ0 50।
12. गोस्वामी तुलसीदास, विनयपत्रिका, अन0 हनुमानप्रसाद पोद्दार, गीताप्रेस (गोरखपुर, 2080), पद्य सं0 76/1, पृ0 110।
13. गोस्वामी तुलसीदास, बरवैरामायण, टीकाकार, श्री श्री कांत शरण, पद्य सं0 59 (पटना सं0 2014), पृ0 87।
14. गोस्वामी तुलसीदास, रामचरितमानस, बालकांड, पद्य सं0 30/6, टीकाकार हनुमानप्रसाद पोद्दार, गीताप्रेस (गोरखपुर संवत 2080), पृ0 35।
15. रामचरित मानस, बालकांड, पद्य सं0 7/5, पृ0 3।
16. गोस्वामी तुलसीदास (श्यामसुंदरदास), पृ0 37।
17. वही, पृ0 39।
18. इंडियन एंटीक्वेरी, भाग 22, पृ0 267।
19. गोस्वामी तुलसीदास, हनुमान बाहुक, पद्य सं0 40, टीकाकार, महावीर प्रसाद मालवीय, गीताप्रेस (गोरखपुर सं0 1999), पृ0 58।
20. तुलसी साहिब, घट रामायण, भाग 2, पृ0 188।
21. तुलसीग्रंथावली, भाग–3, भूमिका, पृ0 1–6।
22. मूल गोसाईचरित, दोहा–94, पृ0 72।
23. गोस्वामी तुलसीदास, वैराग्य संदीपनी।
24. तुलसीदास, जानकीमंगल, टीकाकार हनुमान प्रसाद पोद्दार, गीताप्रेस (गोरखपुर, सं0 2038), पृ0 3।
25. तुलसीदास, जानकीमंगल, टीकाकार हनुमानप्रसाद पोद्दार, गीताप्रेस (गोरखपुर, सं0 2038), पृ0 3।
26. गोस्वामी तुलसीदास, रामाज्ञा प्रश्न, हि0 अनु0 सुदर्शन सिंह, गीताप्रेस (गोरखपुर, संवत 2066)।
27. वामदेव शर्मा, बर्वेरामायण (इलाहाबाद, 1927), पृ0 परिचय।
28. तुलसीग्रंथावली, खण्ड–2, काशी नागरि प्रचारिणी सभा (वाराणसी, 1980), पृ0 11।
29. गोस्वामी तुलसीदास, श्री कृष्ण गीतावली, पण्डित गौड़ दामोदर शर्मा, (मीरजापुर, वि0सं0 1888)।
30. गोस्वामी तुलसीदास, दोहावली, अनुवादक–हनुमानप्रसाद पोद्दार, गीताप्रेस (गोरखपुर सं0 2079), पृ0 3।
31. रामचरितमानस, बालकांड, पद्य सं0 33/2–3, पृ0 38।
32. रामचरितमानस, पृ0 5–12।
33. गोस्वामी तुलसीदास, कवितावली, अनु0–इन्द्रदेवनारायण, पृ0 4।
34. उदयभानु सिंह, तुलसी काव्य मीमांसा (दिल्ली 1966), पृ0 104।
35. डॉ0 रामअवतार पाण्डेय, तुलसीकृत विनयपत्रिका का काव्यशास्त्रीय अध्ययन (वाराणसी, 2001), पृ0 XV ।

•